रासलीला

(व्यभिचार नहीं; अपितु कृष्णद्वारा गोपियोंको प्रदत्त अद्वैतकी अनुभूति !)

अनुक्रमणिका

१. व्युत्पत्ति व अर्थ ११

२. भगवानकी रासलीलाका वर्णन करनेवाला श्रीमद्भागवत पुराण ११

२ अ. रचना ११

२ आ. प्रवक्ता भगवान शुकाचार्य १२

२ इ. श्रवणकी पात्रता १२

२ ई. लाभ किसे होता है ? १३

२ उ. फलश्रुति १४

३. रासलीलाकी पार्श्वभूमि : गोपियोंकी मधुराभक्ति १४

३ अ. मधुराभक्तिका अर्थ १४

३ आ. मायाका मिलन व मधुराभक्तिसे साध्य होनेवाला अद्वैत १४

३ इ. महत्त्व १५

३ ई. गोपियां व राधा १६

३ उ. मधुराभक्ति करनेवाले जीवकी साधना २१

३ ऊ. चरण २१

३ ए. मधुराभक्ति करनेवालोंके उदाहरण २१

४. रासलीलाका प्रसंग २२

४ अ. श्रीकृष्णका गोपियोंको रासलीलाका अभिवचन देना २२

४ आ. रासलीलाकी निशा २३

५. महत्त्व २५

६. रासलीला समझ लेना २६

६ अ. बुद्धिद्वारा समझमें आनेवाले उत्तर २६

६ आ. रासलीला कब समझमें आती है ? ३०

६ इ. देवता व रासलीला ३२

६ ई. श्रीकृष्णकी विशेषताएं ३३

६ उ. रासलीलाका गोपियोंपर हुआ परिणाम ३४

७. मधुराभक्ति व रासलीलाके माध्यमसे गोपियोंका मोक्षतक मार्गक्रमण ३७

७ अ. विविध स्तरोंपर हुई गोपियोंकी उन्नति (भक्तिमार्गमें उन्नतिके चरण) ३७

७ आ. श्रीकृष्णका स्वयं चरण-दर-चरण गोपियोंको जीवदशासे शिवात्मादशामें ले जाना ३९

७ इ. श्रीकृष्णका गोपियोंको सगुणसे निर्गुणकी ओर, चरण-दर-चरण ले जाना ४०

७ ई. श्रीकृष्ण साक्षात् ईश्वर हैं; इसलिए उनसे एकरूप होनेपर गोपियोंको सायुज्य मुक्तिकी अपेक्षा मोक्ष प्राप्त होना ४३

८. श्रीकृष्णसे एकरूप होते समय गोपियोंको हुई अनुभूतियां ४३

९. रासलीलाका भावार्थ ४३

९ अ. सर्वत्र श्रीकृष्ण ही हैं, इसलिए रासलीला अर्थात् उनका स्वयंसे मिलन ४४

९ आ. रासलीला अर्थात् आत्माका परमात्मासे मिलन ४४

९ इ. मायामें रहकर ब्रह्मकी अनुभूति होना अर्थात् 'रास'; उससे प्राप्त आनंदका लाभ अन्योंको प्रदान करने हेतु श्रीकृष्णद्वारा रासनृत्यकी निर्मिति ४४

१०. रासलीलाका सार ४५

१० अ. स्वयं रासलीला रचना आत्मविद् व ऋषियोंके लिए संभव न होनेका कारण ४५

१० आ. गोपियोंद्वारा रासलीला संभव होनेका कारण ४५

१० इ. श्रीकृष्णद्वारा रासलीला संभव होनेका कारण ४५

११. रासलीलासे संबंधित श्रीकृष्णकी सीख ४६

११ अ. जीवोंको यह प्रतीति देना कि, 'रासलीला' सुखभोगका साधन नहीं, आनंदप्राप्तिका एक साधन है ४६

११ आ. मायाकी प्रत्येक कृतिद्वारा आनंद प्राप्त करना व उसे अनुभव करना सिखाना ४६

११ इ. निकटता साध्य कर समझाना कि, ईश्वर क्या हैं ४६

११ ई. ईश्वरसे प्रेम तथा उससे आनंदप्राप्ति सिखाना ४७

११ उ. बोध देना कि, मायाकी कृतिद्वारा भी आनंद प्राप्त किया जा सकता है ४७

११ ऊ. रासलीलाका स्तर आध्यात्मिक होना व बढ़ते स्तरानुसार गोपियोंका आध्यात्मिक स्तरपर जाना ४७

११ ए. गोपियोंको कामवासनासे मुक्त कर, कम अवधिमें गुरु समान उन्हें सगुणसे निर्गुणकी ओर ले जाना ४७

११ ऐ. समष्टि साधना – एक ही समयपर अनेक गोपियोंकी आध्यात्मिक उन्नति करवाना ४८

१२. रासलीलाके विषयमें संदेह करना भी पाप ४८

१३. रासनृत्यके प्रकार ४८

१३ अ. नित्य रास ४८

१३ आ. अवतरित रास ४८

१३ इ. अनुकरणात्मक रास ४८

१४. श्रीकृष्णपर प्रेमके कारण साधकोंको हुई अनुभूतियां ४९

१५. मायावी मांत्रिकोंकी व श्रीकृष्णकी रासलीला ५३

१६. क्षात्रधर्म साधना भी एक रासलीला ही है ! ५५

भूमिका

रासलीलाका नाम लेते ही, शरद ऋतुमें पूर्णिमाकी चांदनी रात और श्रीकृष्णद्वारा राधा व गोपियोंसहित रचे रासोत्सवका लुभावना दृश्य आंखोंके सामने आता है । श्रीमद्‌भागवत पुराणमें महर्षि व्यासके वर्णन अनुसार यह रासोत्सव उस रात आरंभ होकर, दिशाओंके प्रकाशमान होनेतक अविरत चला । साक्षात् ईश्वरके साथ खेली गई इस रासकी अद्वितीयताका वर्णन शब्दोंमें नहीं किया जा सकता । गोपियोंकी भक्तिको 'आदर्श भक्ति'की उपमा दी जाती है । मोहमायासे विरक्त गोपियोंकी व भगवान श्रीकृष्णकी रासलीला कितनी पवित्र होगी !

फिर भी कलियुगमें रासलीलाको संदेहकी दृष्टिसे देखा जाता है । इतना ही नहीं, भगवान व गोपियोंके बीच क्रीड़ा कुछ लोगोंको अधर्मयुक्त लगती है । मायाके निर्माता स्वयं साक्षात् ईश्वर क्या ऐसा कर सकते हैं ? वर्तमान कालमें रंगपंचमी तथा नवरात्रोत्सवमें गरबा नृत्यका विकृत स्वरूप देखनेको मिलता है, जिसमें व्यभिचार होता है । रासलीलाके भावार्थको समझे बिना, उसका विकृत रूप प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे धर्ममूल्योंका पतन हो रहा है ।

वास्तवमें तो रासलीलारूपी भगवानकी लीला, मायामें रहकर भी ब्रह्मको जाननेकी सीख है । इस हेतु मायामें भी ईश्वरका स्मरण करना चाहिए ।

इस ग्रंथमें रासलीलाके भावार्थ (गूढ़ार्थ), मधुराभक्तिका अर्थ, मर्म व फलश्रुति इत्यादि जानकारी दी गई है । साथ ही रासलीलाके विषयमें, साधिकाओंको प्रत्यक्ष ईश्वरसे प्राप्त अमूल्य ज्ञानका आनंद भी लिया जा सकता है । श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि, रासलीलाके बारेमें संदेह दूर हों, वह समझमें आए व उसका आध्यात्मिक महत्त्व जाननेके लिए प्रस्तुत जानकारी तथा ज्ञानका उपयोग हो !

- संकलनकर्ता